खेल जंग का

लेखन: कैथी बैकविथ

चित्र: लीआ लिऑन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

खेल जंग का

गर्मियों के एक दिन ल्यूक और उसके दोस्तों ने अपना पसन्दीदा जंग का खेल खेलना तय किया। वे टहनियों को बन्दूक और देवदारु के शंकुओं को बम और ग्रेनेड बनाते थे। समीर को उनके मुहल्ले में आए ज़्यादा समय नहीं हुआ था। वह इस खेल में शरीक होने में हिचकता है। बाद में जब वह जैन, जैफ और डैनी को बताता है कि वह सच में एक जंग का हिस्सा रहा है, वे उसका विश्वास ही नहीं करते।

"हो ही नहीं सकता! तुमने हमें इस बारे में कभी बताया ही नहीं। एक असली जंग? क्या वे बच्चों को भी फौजी बनने देते थे? क्या तुम्हारे पास भी एम 16 बन्दूक थी?"

तब समीर बताता है कि उसके परिवार के साथ क्या घटा था। इसके बाद बाकी बच्चे जंग को एक दूसरी ही नज़र से देखने लगते हैं।

हालांकि *जंग का खेल* यह समझाने के लिए है कि जंग का परिवारों पर क्या असर पड़ता है, और यह भी कि जंग कोई खिलवाड़ नहीं। यह क़िताब दोस्ती की ताकत के बारे में एक संवेदनशील कथा भी है, जो बताती है कि बच्चे एक-दूसरे से कैसे सीखते हैं।

खेल जंग का
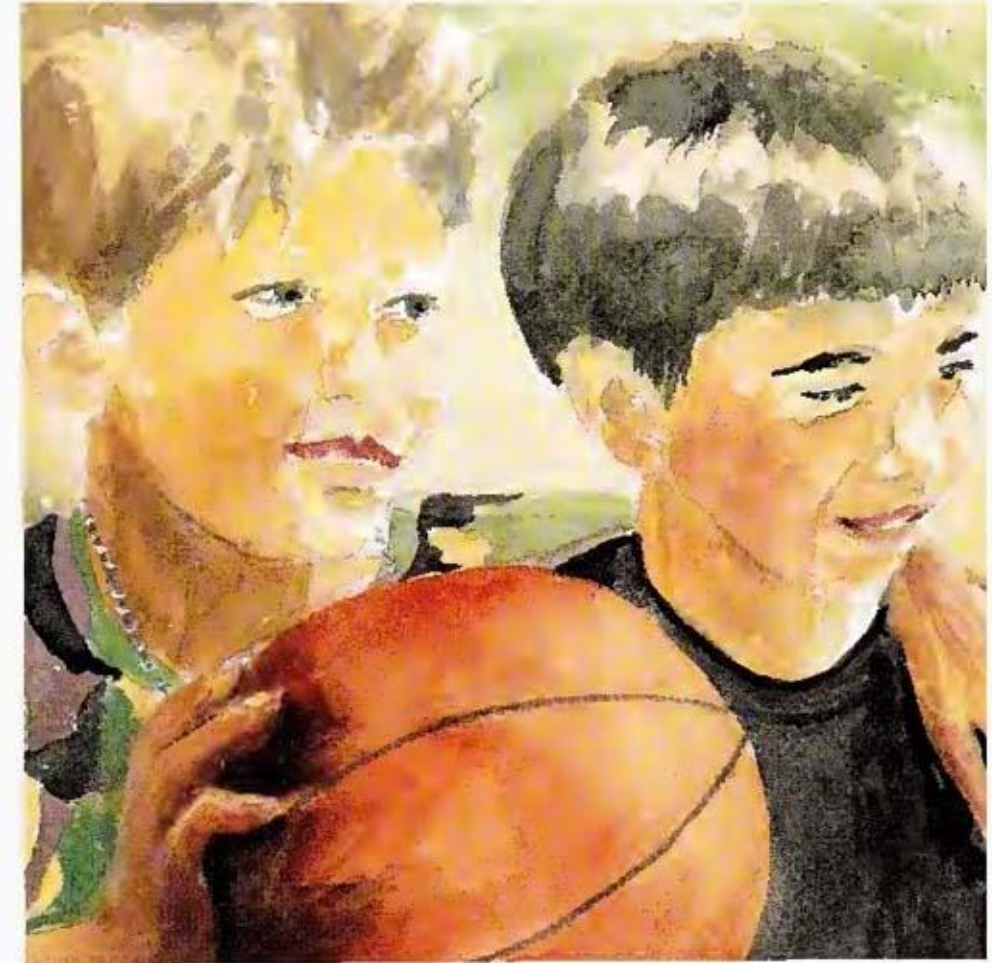
लेखन: कैथी बैकविथ

चित्र: लीआ लिऑन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

"बास्केटबॉल के लिए बहुत ही गर्मी है,"
ल्यूक बोला। "अपन कुछ और करते हैं।"

वे अहाते में यह तय करने विलो (नम्रा का पेड़) के तले चले आए कि आगे क्या करें।

"क्या तुम्हारे पास पानी भरे और गुब्बारे हैं?" डैनी ने पूछा।

"ना," ल्यूक ने जवाब दिया। "काश, और होते।"

"हम कोई विडियो गेम खेल सकते हैं," समीर ने मुस्कुराते हुए सुझाया।

"ना। माँ ने कहा है कि हमें बाहर ही खेलना है।"

"मुझे पता है," जैफ बोला। "अपन जंग का खेल खेलते हैं।"

ल्यूक फ़ौरन खड़ा हो गया। "अच्छा ख़याल है।"

"साइकिल चलाने के बारे में क्या सोचते हो," जैन ने पूछा।

"ना भई ना," जैफ ने कहा। "जंग का खेल ही सबसे अच्छा रहेगा। हमने कई दिनों से खेला भी नहीं है।"

"हाँ," ल्यूक ने जोड़ा। "यह खेल सकते हैं। हम घात लगा कर अचानक हल्ला कर सकते हैं। जैन तुम तो जानती हो कि तुम ग्रैनेड कितनी अच्छी तरह फेंक सकती हो।"

जैन मुस्कुरा दी।
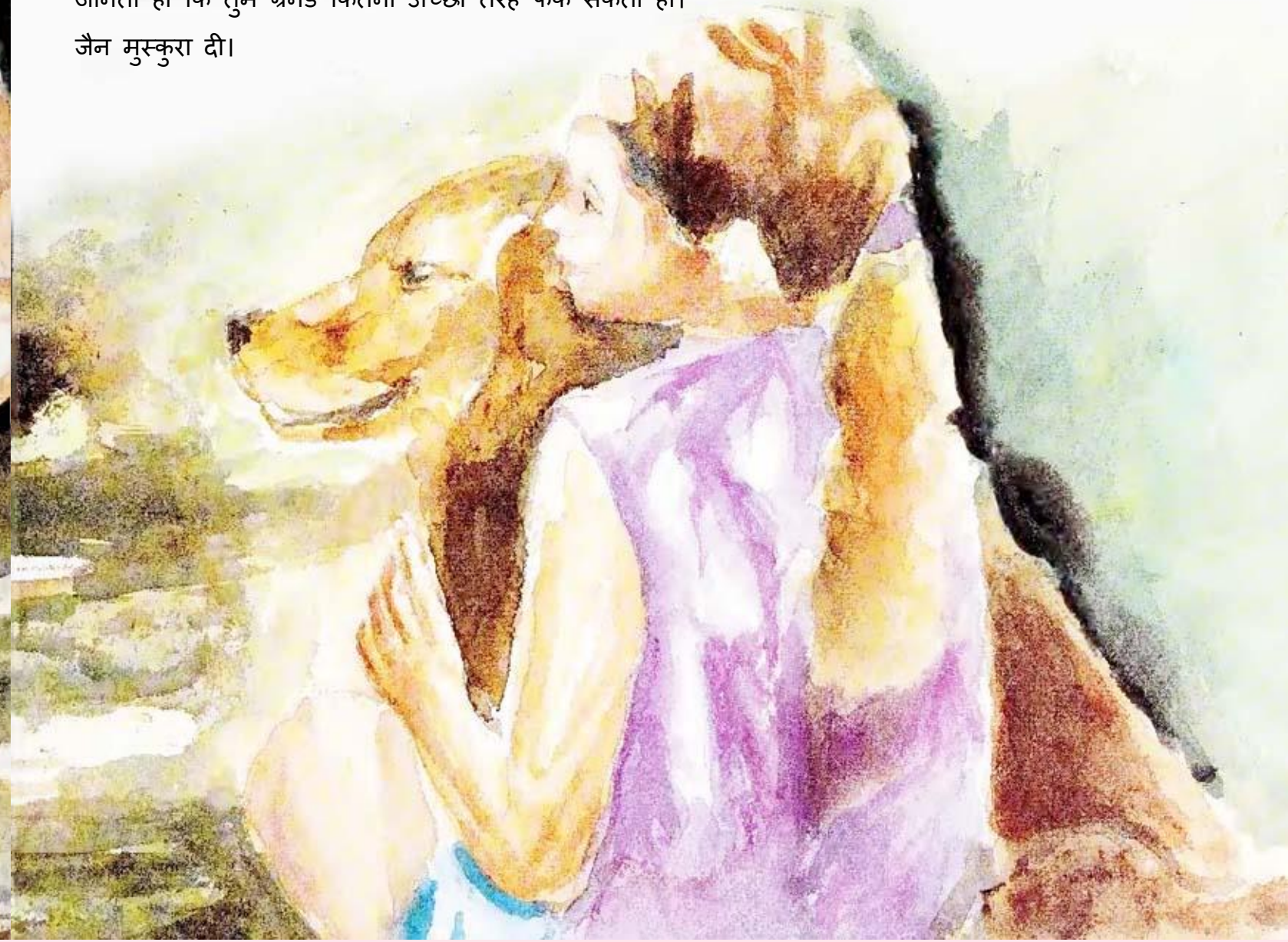
ल्यूक ने एक डंडी उठाई और उससे मिट्टी में एक लम्बी रेखा खींची। रेखा के एक तरफ उसने बड़ा-सा एस लिखा और दूसरी तरफ़ ई।

''सबसे पहले हमें दल बनाने होंगे - सोलजर्स् (सैनिक) और एनिमी (दुश्मन)।''

उसने सिर से अपनी बेसबॉल वाली टोपी उतारी और सावधानी से रेखा के बीचोंबीच रख दी। दूसरे बच्चे उसे यह करते देखते रहे।

जैन झुकी और समीर को खेल के नियम बताने लगी।

''अब सब ल्यूक की टोपी में डालने के लिए कुछ खोज लेंगे। तब वह सब रेखा के ऊपर से फेंका जाएगा ताकि पता चले कि कौन सैनिकों की ओर से खेलेगा और कोन दुश्मनों की ओर से। हम खेल ऐसे ही शुरू करते हैं। देखो ल्यूक अपना डॉग टैग डालेगा। वह हमेशा यही करता है!''
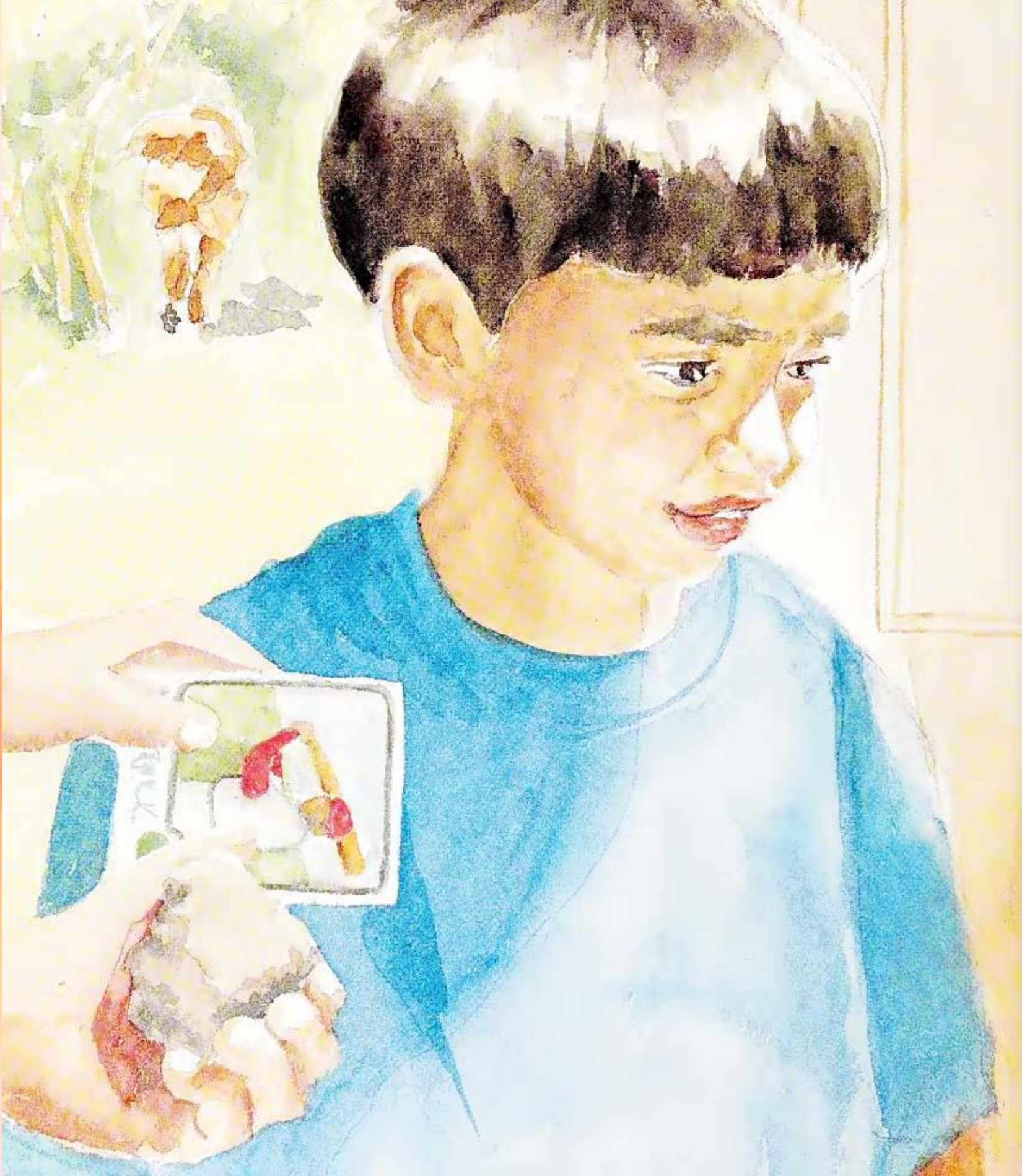
“डॉग टैग (सैनिकों के गले में लटकने वाला टैग जो उनकी पहचान बताता है) क्या होता है?” समीर ने जानना चाहा। वह दूसरे देश से अपने चाची-चाचा के साथ रहने आया था। उसने बास्केटबॉल खेलना तो जल्दी सीख लिया था, पर उसे पता नहीं था कि जंग का खेल कैसे खेला जाता है।

ल्यूक ने अपने गले में लटके धातु के टैग को उतार कर समीर को दिखाया। “यह डॉग टैग है। मेरे मामा एक समय असल जंग में थे। जब वे लौटे तब उन्होंने मुझे यह दे दिया। सैनिक इसे हमेशा पहने रहते हैं। यह बेहद ज़रूरी होता है।”

समीर ने उस चमकते टैग को उंगलियों से छुआ। “मेरे पास तो यह नहीं है,” वह बोला।

“कोई फर्क नहीं पड़ता,” ल्यूक समझाते हुए बोला। “किसी दूसरे के पास भी नहीं है। तुम टोपी में कुछ भी डाल सकते हो। जैन एक ढ़ेला डाल रही है, और डैनी बेसबॉल का कार्ड।”

समीर ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक लकड़ी से बना लट्टू निकाला। “क्या मैं इसका इस्तेमाल कर सकता हूँ?” उसने जानना चाहा।

“यह क्या है?” डैनी ने सवाल किया।

"यह लट्टू है," समीर मुस्कुराते हुए बोला। "हो सकता है लट्टू यहाँ न मिलते हों।"

उसने जेब से एक डोरी निकाली और लट्टू के गिर्द लपेटी। "यह मेरे घर में मेरे पास हुआ करता था।" पल भर में लट्टू उनके पैरों के पास तेज़ी से घूम रहा था। समीर ने उस घूमते लट्टू को हवा में उछाला, उसे रोक लिया और ल्यूक की टोपी में डाल दिया।

"अरे वाह!" ल्यूक बोला।
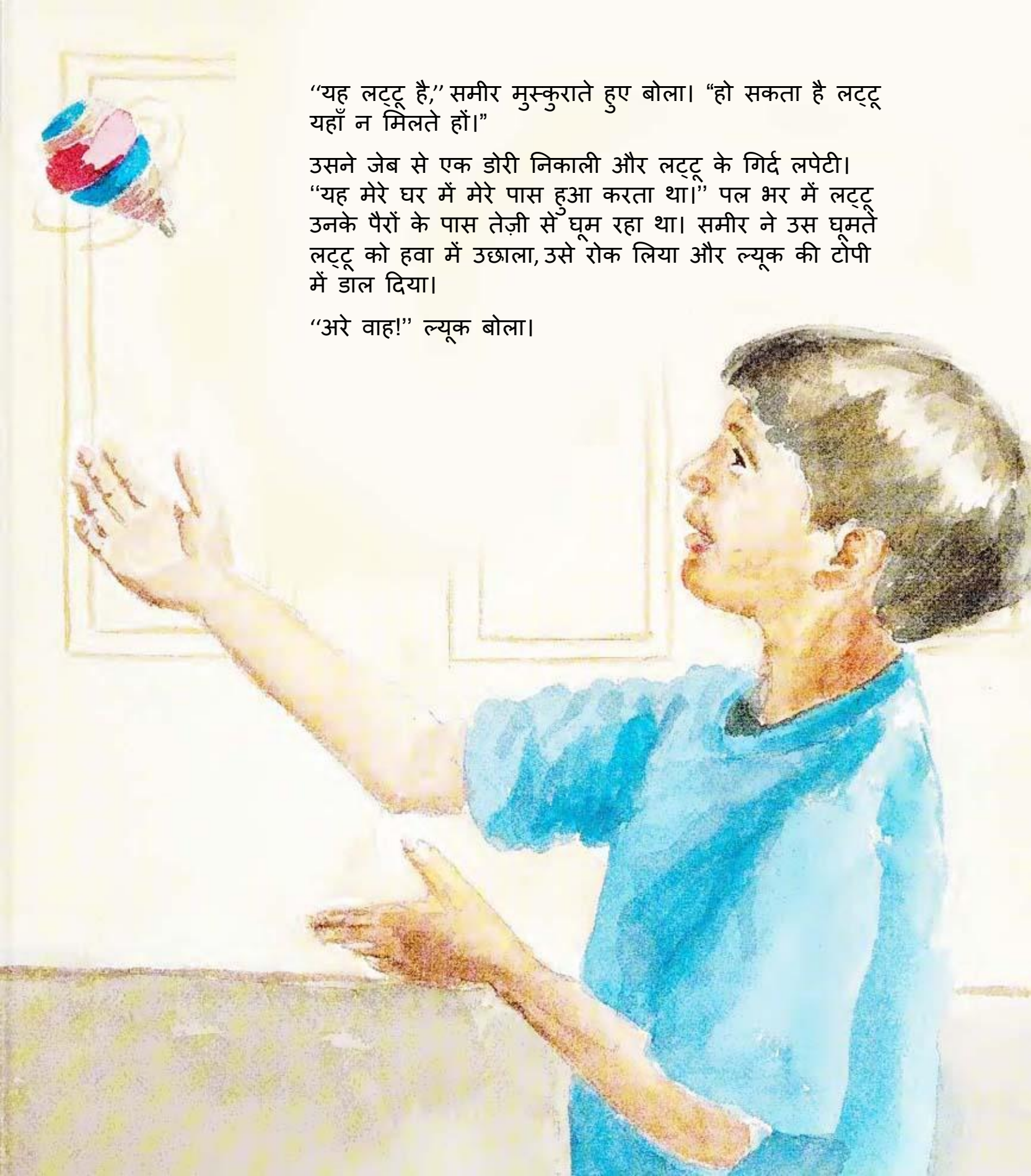
जब सब उसमें कुछ-कुछ डाल चुके ल्यूक ने टोपी को घुमा कर उछाला, तब बोल उठा, ''डैनी, जैन और जैफ सैनिक हैं और मैं और समीर दुश्मन।''

दूसरे हिले तक न थे कि ल्यूक पहाड़ी की ढ़लान पर बेतहाशा दौड़ा। वह चीखा "दुश्मन देवदारु" के झुरमुट की तरफ जाएं और, सैनिक यहीं रहें।''
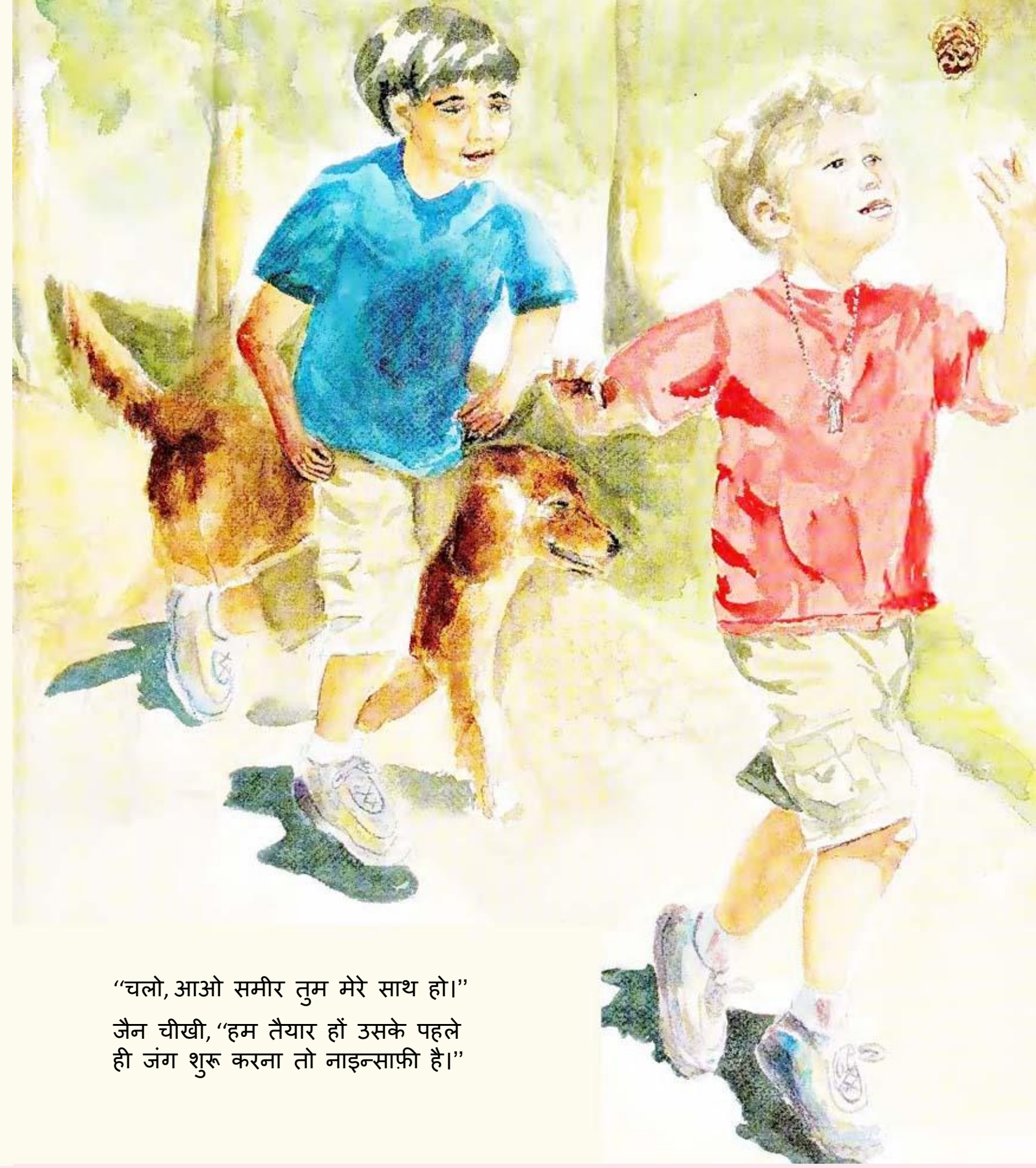
''चलो, आओ समीर तुम मेरे साथ हो।''

जैन चीखी, ''हम तैयार हों उसके पहले ही जंग शुरू करना तो नाइन्साफ़ी है।''
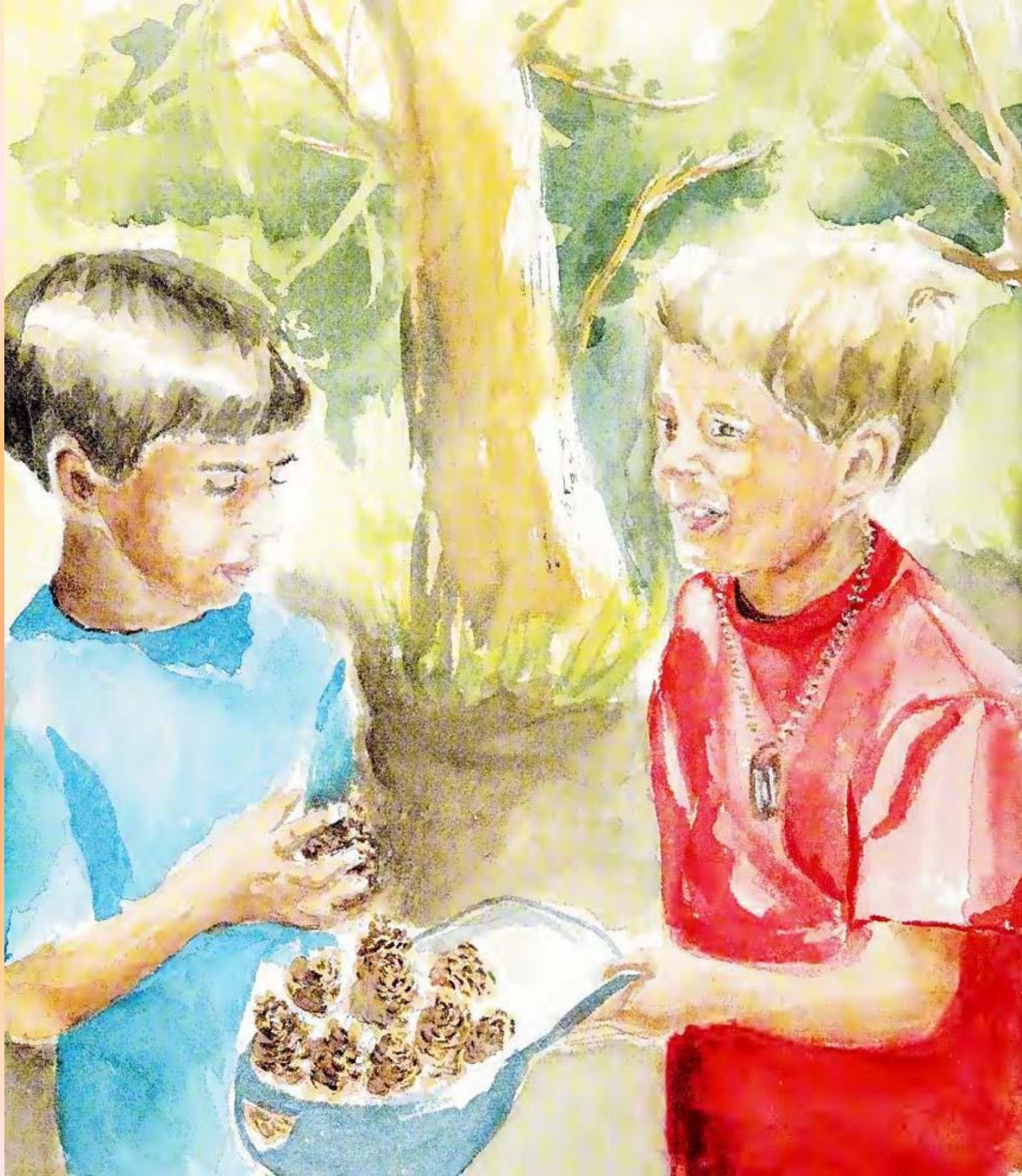
“हम जंग की तैयारी कैसे करेंगे?” समीर ने पेड़ों के झुरमुट के पास पहुँच कर पूछा।

“टहनियों की बन्दूकें बनाएंगे और देवदारु के शंकुओं के बम और ग्रैनेड। यही हमले की योजना है,” ल्यूक ने जवाब दिया।

चन्द ही मिनटों में ल्यूक की टोपी देवदारु के शंकुओं से भर चुकी थी। समीर के हाथ में सिर्फ़ एक शंकु था।

“सिर्फ़ एक?” ल्यूक ने सवाल किया।

“यही काफ़ी है,” समीर बोला।

“हो सकता है तुम्हारे लिए काफ़ी हो, पर मेरे लिए नहीं! मैं सबके सिर उड़ा दूँगा!”

समीर ने अपना शंकु ल्यूक को थमाया।

"अरे मुझे याद आया कि आज मुझे जल्दी घर पहुँचना है," उसने कहा और ल्यूक को जंगल में खड़ा छोड़ चल पड़ा।

"अरे रुको तो," ल्यूक ने पीछे से आवाज़ लगाई। "मैं अकेला दुश्मन रह जाऊँगा। मुझ अकेले के सामने वे बहुत ज़्यादा हैं।"

पर समीर जा चुका था।

अगली सुबह जब बच्चे इकट्ठा हुए ल्यूक की योजना तैयार थी। उसने घर के पीछे वाले जंगल से ढ़ेर से देवदारु के शंकु इकट्ठा किए थे। अब वे छोटी ढ़ेरियों में अहाते में छिपे थे।

ल्यूक जंग का खेल शुरू करने को बेताब था। ''काश बच्चों को भी जंग लड़ने दी जाती,'' उसने कहा। ''असली वाली। हम किसी को भी हरा देते, बुरी तरह।''

''ऐसी जंग होती है ना,'' समीर ने आहिस्ता से कहा।

''क्या?'' ल्यूक ने मानो चुनौती देते हुए कहा। ''कहाँ?''

"मेरे घर में," समीर ने जवाब दिया। उसने बास्केटबॉल उठाई, उसे टप्पे खिलाते बास्केट तक ले गया। उसे उछाला। गेंद सीधे बास्केट में गई।

"क्या तुम्हारा मतलब उस जगह से है जहाँ तुम पहले रहते थे?"

"हाँ, मेरा असली घर। जहाँ मैं मुस्तफ़ा चाचू के पास रहने आने के पहले रहता था।" उसने फिर से गेंद उछाली, जो बास्केट में गिरी।

"मैं उस जंग में था," समीर ने कहा। इस बार उसकी गेंद छल्ले से टकरा कर रह गई।

"तुम किस में थे?" जैफ ने पूछा।

"बताया ना, एक जंग में।"

"हो ही नहीं सकता! तुमने हमें इस बारे में कभी कुछ बताया ही नहीं," ल्यूक ने कहा। "असली वाली जंग में? क्या वे बच्चों को फौजी बनने देते हैं? क्या तुम्हारे पास एम 16 बन्दूक थी?"
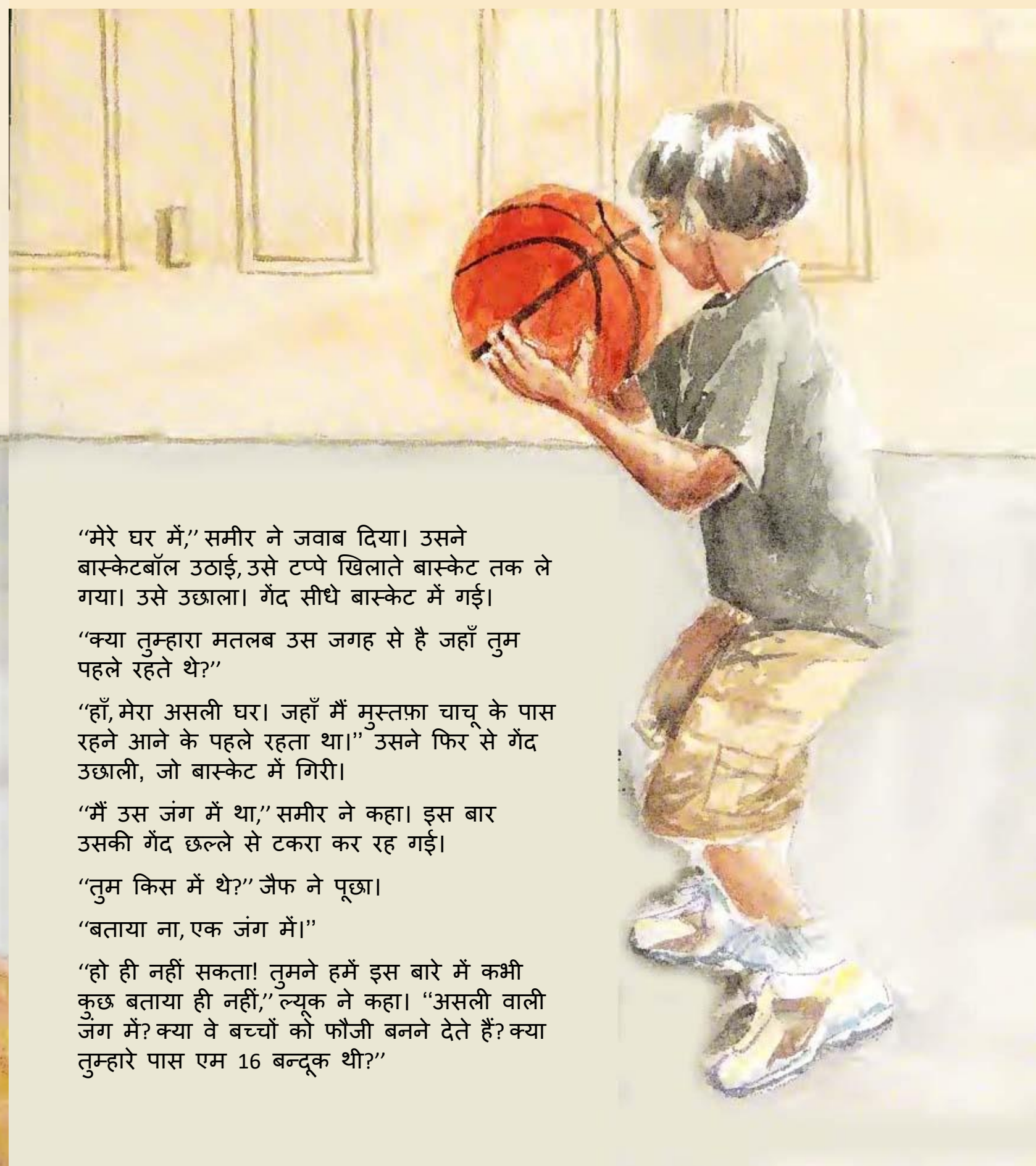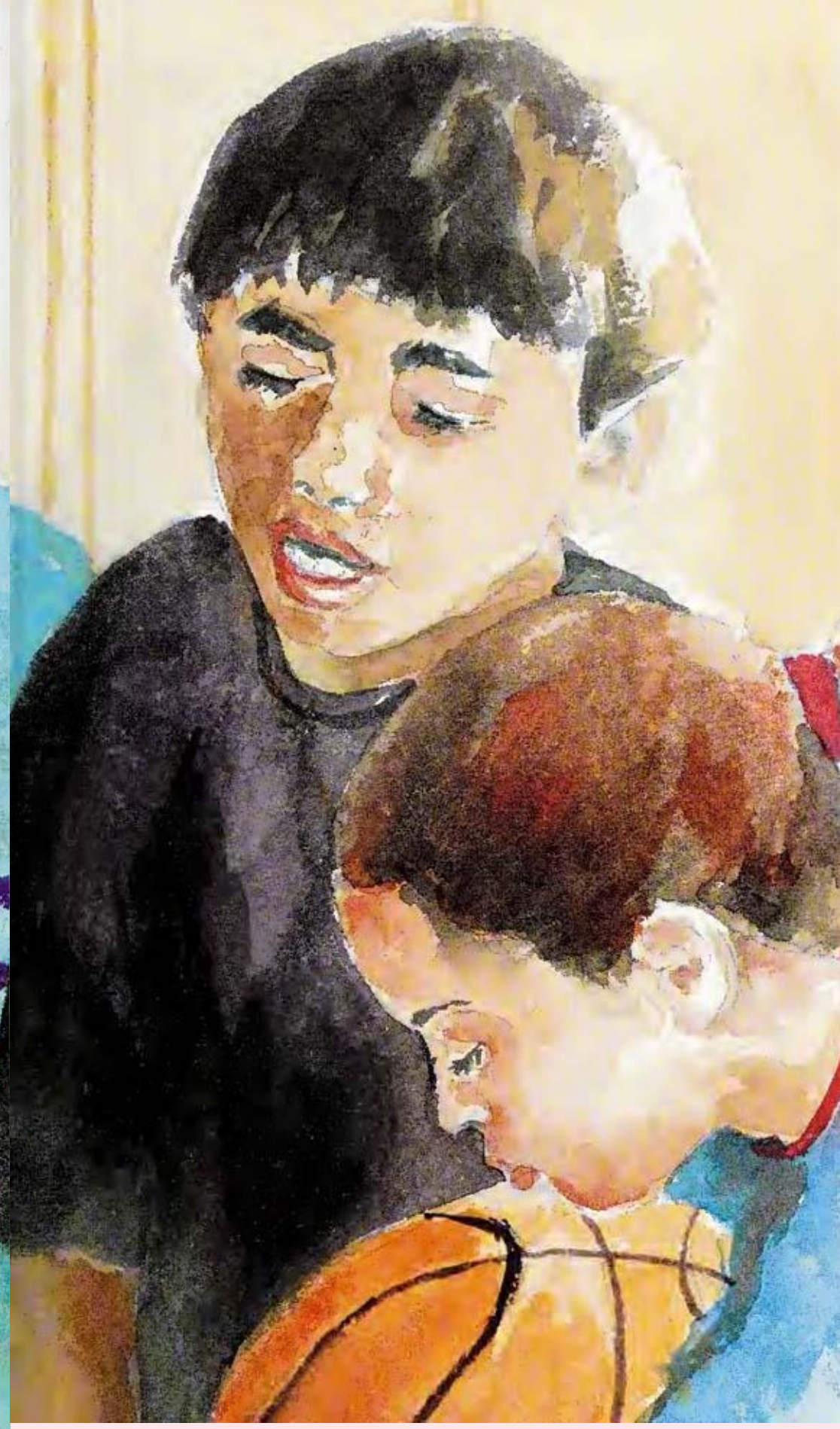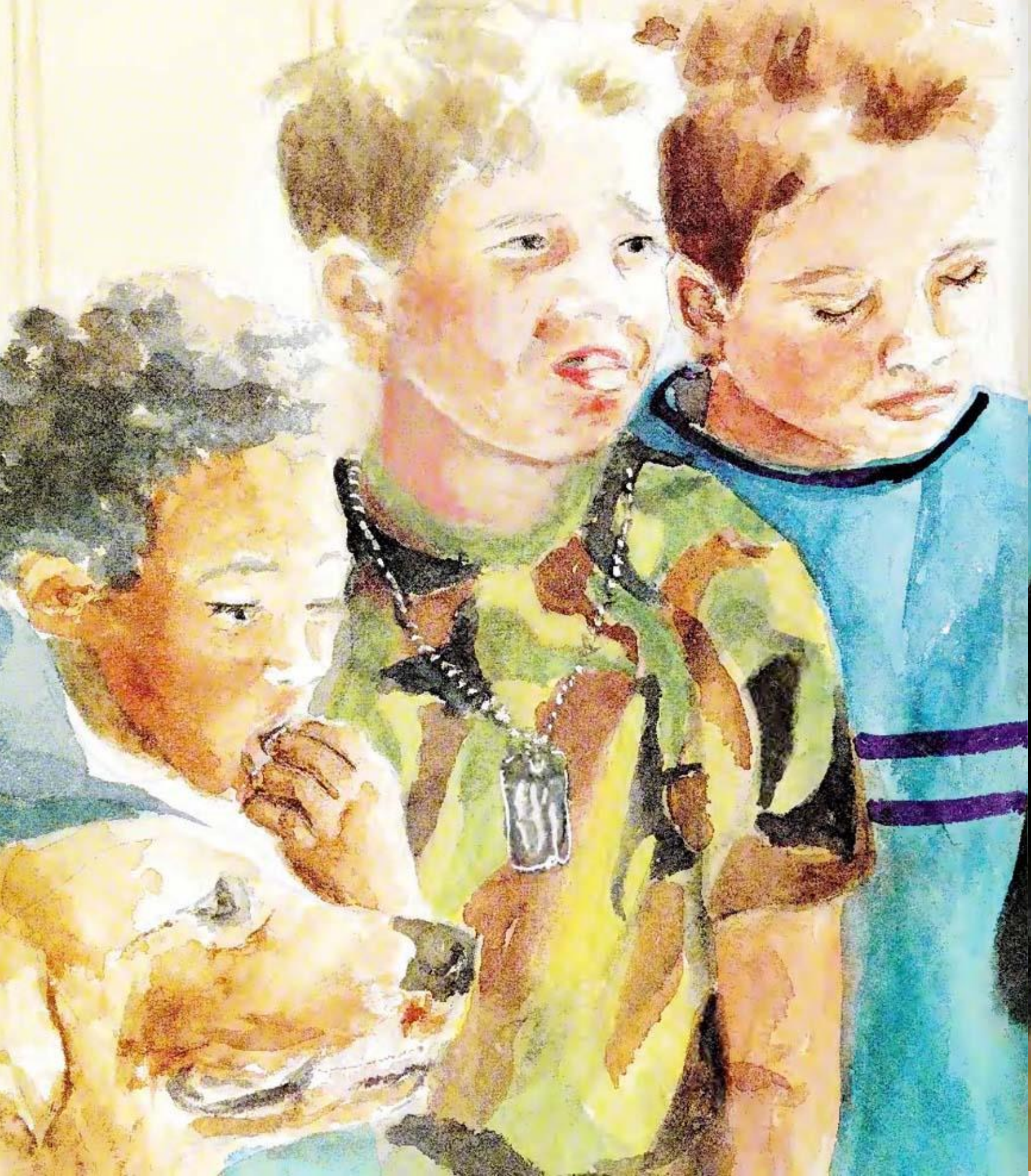
समीर ने गेंद धरती पर पटकी और जैन के पास बैठ गया। हालांकि बच्चे इन गर्मियों में कई बार समीर के साथ खेल चुके थे, वे मुहल्ले में रहने आने से पहले उसकी ज़िन्दगी के बारे में ख़ास जानते नहीं थे।

"मुझे इस बारे में बात करना अच्छा नहीं लगता," समीर ने साँस खींचते हुए कहा। "मैं कोई सैनिक-वैनिक नहीं था। मेरे परिवार में कोई भी सैनिक नहीं था। हम तो जंग में तब फंसे जब उन्होंने हमारे घर को ही उड़ा दिया।"

"किसने उड़ाया तुम्हारा घर?" जैफ़ ने पूछा।

"हमें पता ही नहीं चला। दोनों ही पक्ष एक-दूसरे पर बम-बन्दूकें बरसा रहे थे।" समीर ने अपनी जेब में हाथ डाला, पर यह नहीं लगा कि वह उस लट्टू के बारे में सोच रहा था, जो अब उसके हाथ में था। वह अनमना-सा उस पर डोर लपेटने लगा।

"मेरे पिता, माँ और छोटा भाई घर पर ही थे। वे सब मारे गए। जब यह सब घटा मैं स्कूल में था। इसलिए ज़िन्दा हूँ। इसके बाद मैं चचा मुस्तफ़ा के पास रहने आ गया।"

"पर समीर उन्होंने तुम्हारे परिवार को निशाना क्यों बनाया?" जैन ने फुसफुसा कर पूछा।
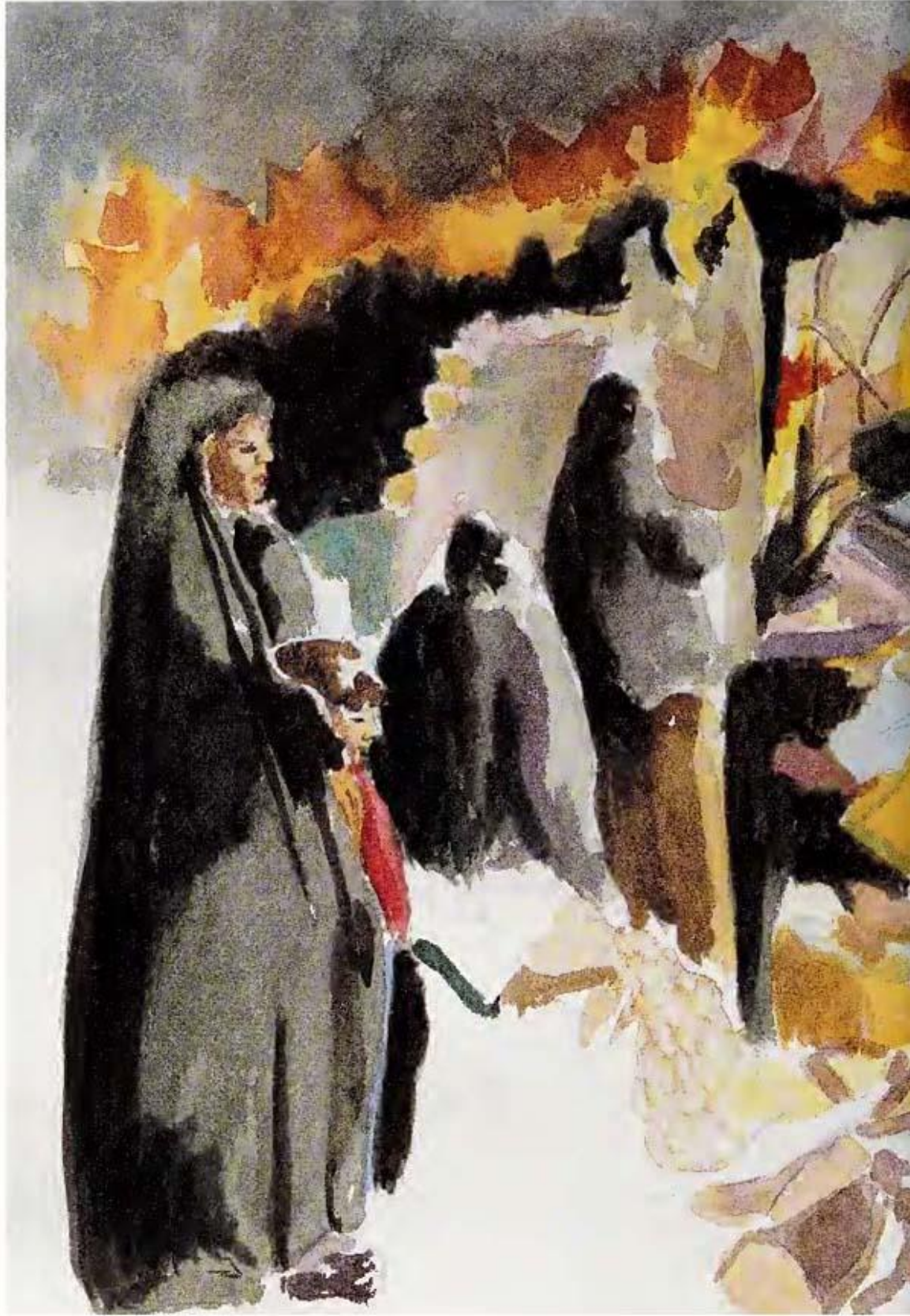
“यह एक भूल थी। वे हमारा घर नहीं उड़ाना चाहते थे। वह बम दरअसल कहीं और ही फटना था।”

सब आँखें फाड़ समीर की ओर देख रहे थे। क्या कहें यह किसी को सूझ ही नहीं रहा था। समीर जिस बारे में बात कर रहा था, उसकी तो वे कल्पना तक नहीं कर सकते थे।

“यह भूल तो भयंकर थी,” आख़िरकार ल्यूक बोला।

समीर ने हामी में सर हिलाया। “काश, यह न हुआ होता!”
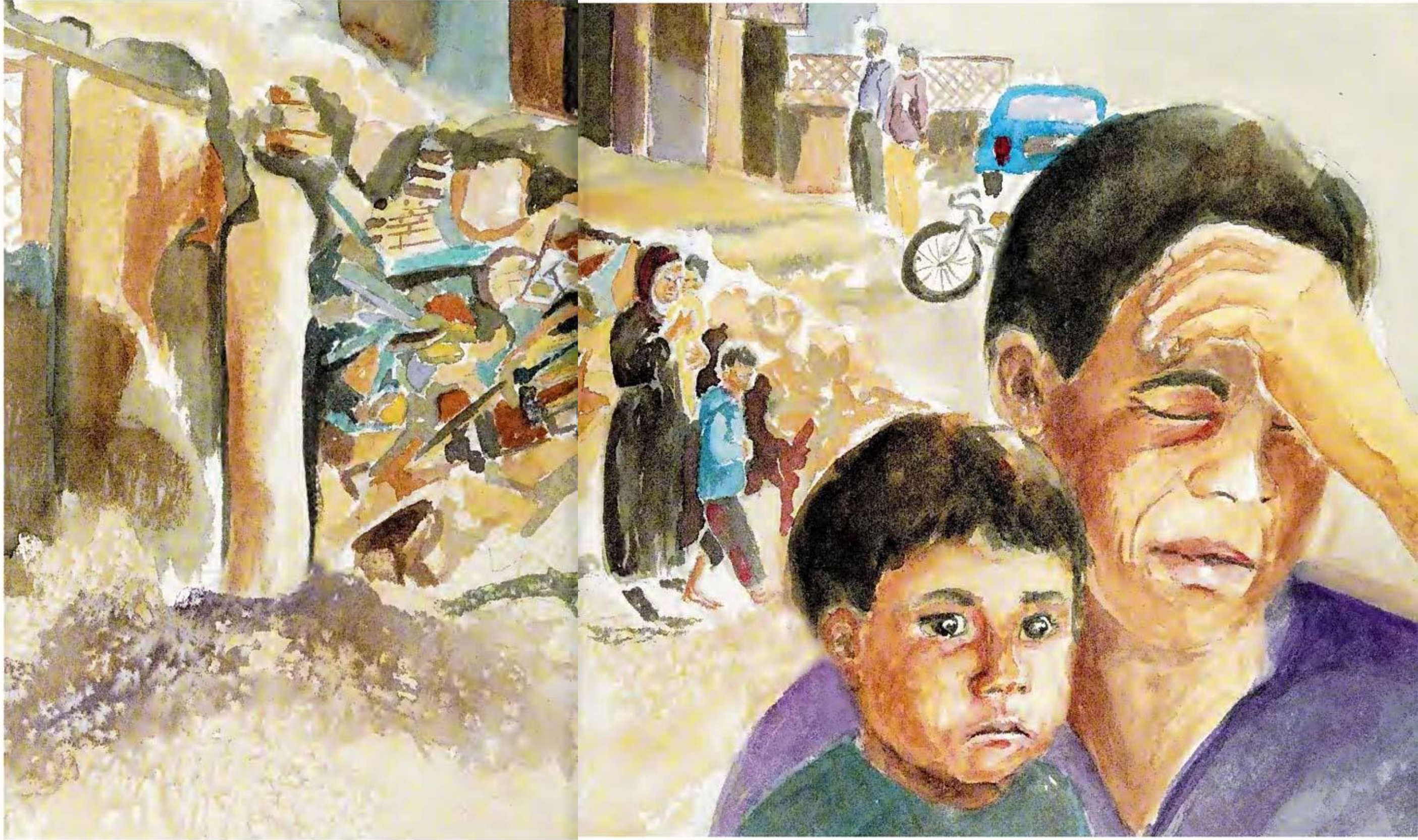
समीर की कहानी सुन ल्यूक को रोना-सर आने लगा था। पल भर उसने समीर के हाथ के लट्टू को देखा। तब वह खड़ा हुआ और मिट्टी पर खिंची रेखा की ओर गया। उसने सावधानी से एस और ई के अक्षर मिटाए।

''क्या हम आज खेलेंगे नहीं ल्यूक?'' डैन ने सवाल किया।

''बिलकुल खेलेंगे,'' समीर के कंधे पर हाथ रखते हुए ल्यूक ने जवाब दिया।
''बास्केटबॉल!''
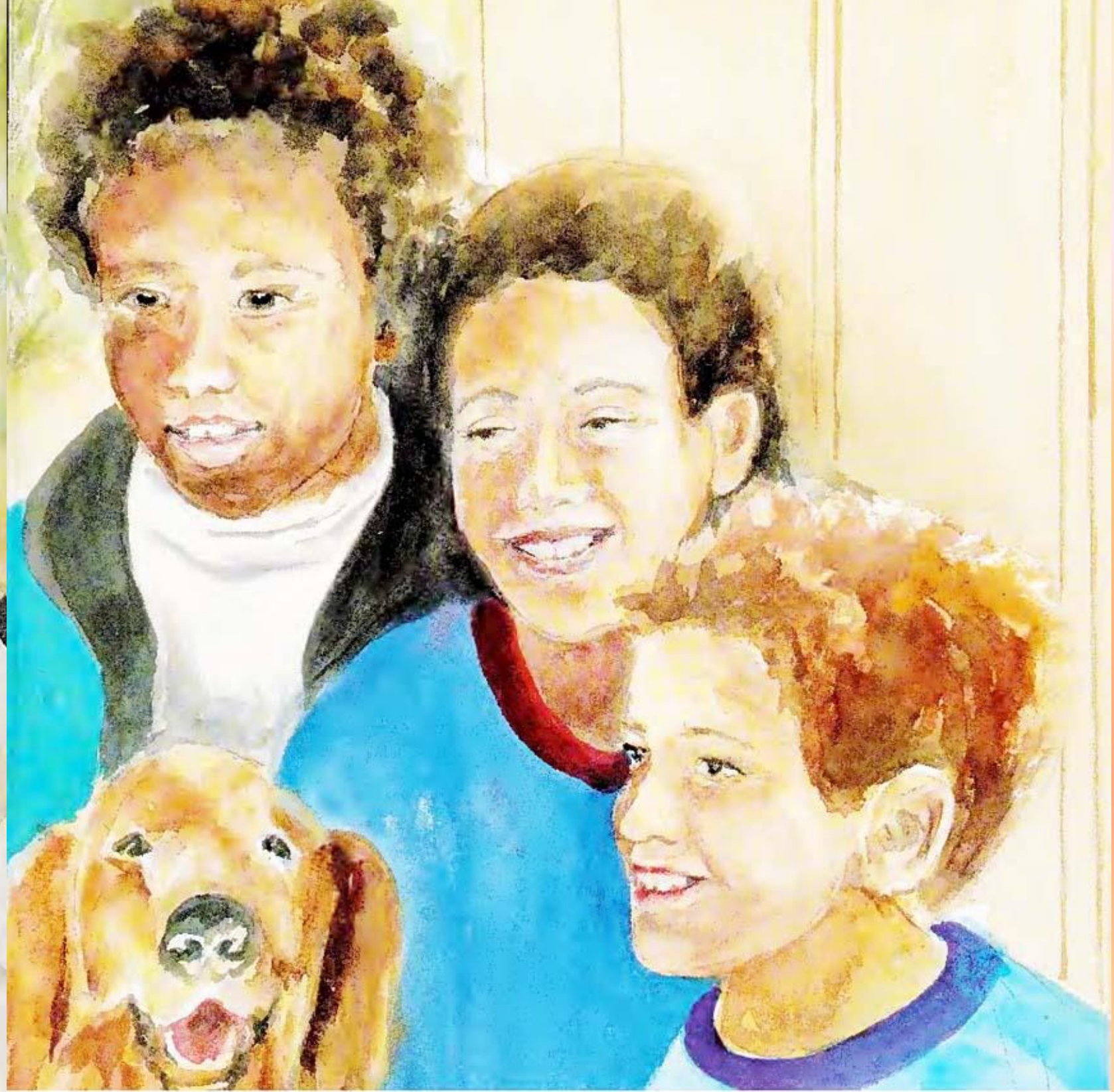
उसने अपने दोस्तों को देखा और बोला, ''जंग के लिए बहुत गर्मी है।''

कैथी बैकविथ

विद्यार्थियों की मध्यस्थता प्रशिक्षिका हैं। वे स्कूलों में मध्यस्थता कोच की तरह स्वैच्छिक सेवाएं देती हैं, अपने समुदाय में मतभेद होने पर मघ्यस्थता करती हैं। वे अपने परिवार के साथ पश्चिमी ओरेगॉन के ग्रामीण इलाके में रहती हैं।

लीआ लिऑन

व्यावसायिक जगत में अपने काम और चित्रकारी के अपने प्रेम के बीच संतुलन बनाने को जूझती रहती हैं। उन्होंने *से समथिंग* के चित्र भी बनाए थे। वे अपनी चित्र बनाने की परियोजनाओं में स्थानीय स्कूली बच्चों को जोड़ती हैं।